1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI. No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-9, अंक-4, फरवरी-मार्च 2026, ₹ 100/-

कला और कलाकारों को समर्पित
राष्ट्रीय पत्रिका का 29 वाँ वर्ष
139 वाँ अंक...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

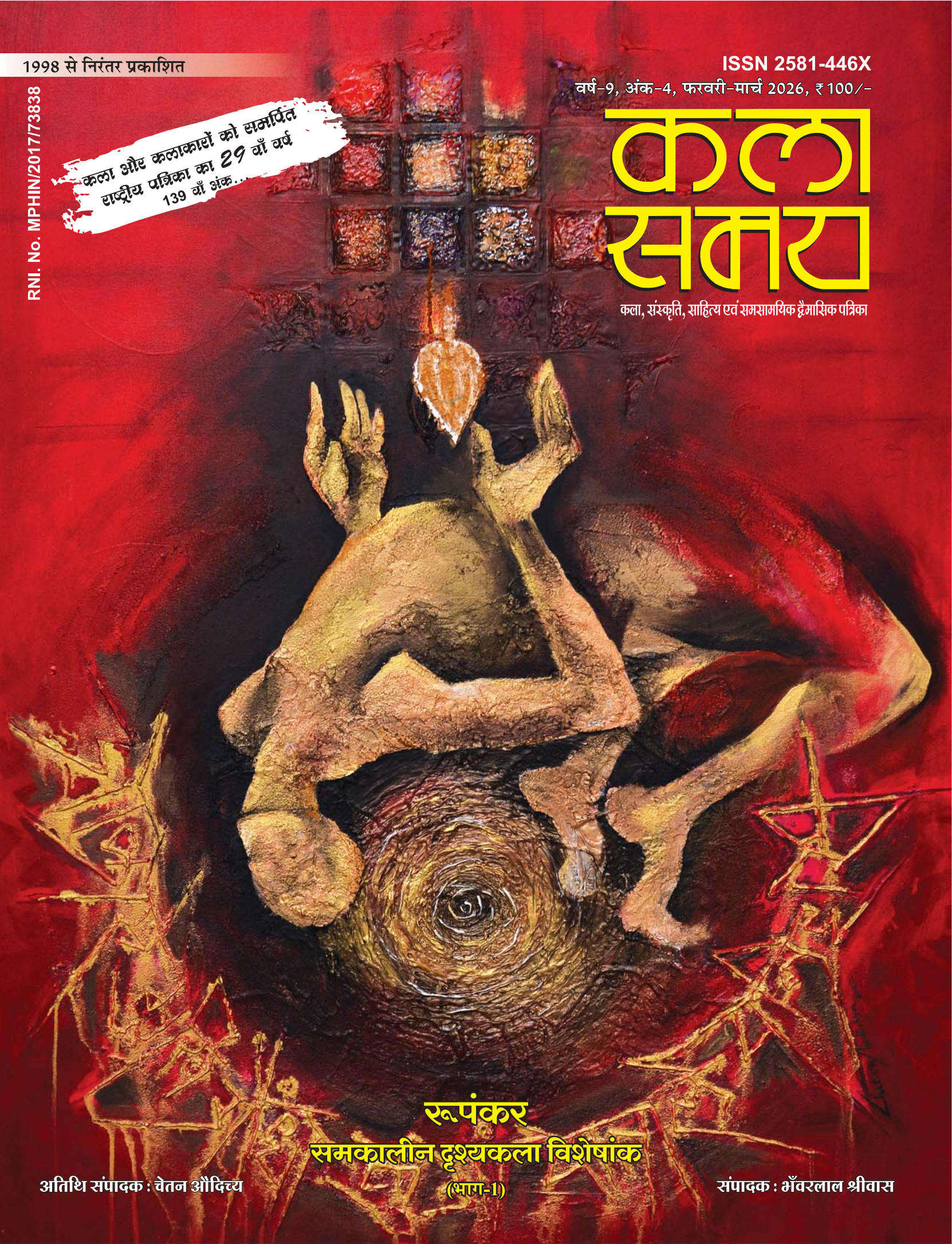

रूपंकर

समकालीन दृश्यकला विशेषांक

(भाग-1)

अतिथि संपादक : चेतन औदिच्य

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

दो वरिष्ठ 'पद्म श्री ' विद्वानों एवं 'कुलगुरु' द्वारा 'हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक, गायकी और घराने' विशेषांक का लोकार्पण

पद्मश्री से सम्मानित डॉ. नारायण व्यास एवं माखनलाल पत्रकारिता विश्व विद्यालय के कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी जी तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बिनय षडंगी राजाराम जी और वरिष्ठ शास्त्रीय गायक, अतिथि संपादक पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' एवं अन्य सहित पत्रिका के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास।

पद्मश्री से सम्मानित श्री कैलाशचंद्र पंत जी एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बिनय षडंगी राजाराम जी और वरिष्ठ शास्त्रीय गायक, अतिथि संपादक पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' सहित पत्रिका के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास।

मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल, निदेशक श्री पवन कुमार डालमियां जी द्वारा पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण कराते हुए पत्रिका के प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास।

पद्मश्री से सम्मानित होने पर डॉ. नारायण व्यास जी का सम्मान करते प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास साथ में डॉ. बिनय षडंगी राजाराम जी तथा नेचर पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्रीराम माहेश्वरी।

पद्मश्री से सम्मानित होने पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री कैलाशचंद्र पंत जी का स्वागत करते हुए प्रधान संपादक भँवरलाल श्रीवास।

RNI NO. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र राष्ट्रीय सांस्कृतिक पत्रिका

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध
https://www.kalasamaymagazine.com
https://www.notnul.com

ISSN 2581-446X
(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)
(वर्ष : 20+09=29) पूर्णांक-139,
वर्ष-9, अंक-4, फरवरी-मार्च 2026, मूल्य : ₹100/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

pnb
MERCHANT: KALA SAMAY
SCAN & PAY
कला समय: सहयोग राशि भुगतान हेतु क्यूआर कोड का उपयोग करे।

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❊ पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान ❊

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. कपिल तिवारी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)
डॉ. श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव

लोगो
हरचंदन सिंह भट्टी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)

कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
देवेन्द्र प्रकाश तिवारी

उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति

नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक

संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य

अरुण तिवारी
समसामयिक

हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

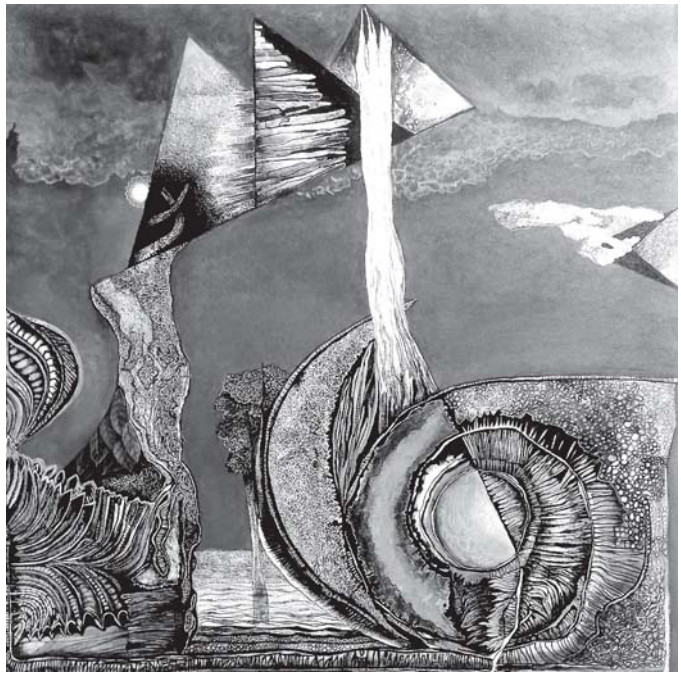

कलाकृति: गोपाल आचार्य

सदस्यता सहयोग राशि:
(रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त) साधारण डाक

वार्षिक	**600 (व्यक्तिगत)**	**700 (संस्थागत)**	साधारण डाक
द्वैवार्षिक	**1200 (व्यक्तिगत)**	**1400 (संस्थागत)**	साधारण डाक
चार वर्ष	**2300 (व्यक्तिगत)**	**2700 (संस्थागत)**	साधारण डाक
आजीवन	**10,000 (व्यक्तिगत)**	**12000 (संस्थागत)**	साधारण डाक

(10 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **https://www.kalasamaymagazine.com**
https://www.notnul.com

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण
पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से संबंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

रूपंकर समकालीन दृश्यकला विशेषांक भाग-1 के प्रमुख विद्वान हस्ताक्षर...

डॉ. कपिल तिवारी
(पद्म श्री सम्मान से विभूषित)

हेमंत शेष

अनिस नियाजी

विक्रम मराठे

विनोद शाही

अवधेश मिश्र

अरविंद ओझा

चन्द्र मोहन

जॉनी एम. एल.

कनु पटेल

प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल

लक्ष्यपाल सिंह राठौड़

डॉ. भारत भूषण

डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला

सुमन कुमार सिंह

राजेश एकनाथ पाटिल

डॉ. पूरन सहगल

डॉ. सुमन चौरे

मनोहर काजल

विनय कुमार

डॉ. चन्द्रशेखर काले

महावीर वर्मा

सदाशिव कौतुक

रमेश शर्मा

मंजरी सिन्हा

शुभम चौहान शोधार्थी

मुकेश दुबे

इस प्रतिष्ठा विशेषांक के अतिथि संपादक

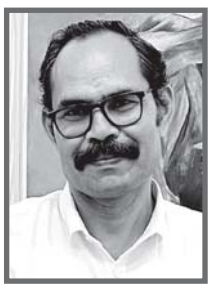

चेतन औदिच्य
अतिथि संपादक
(वरिष्ठ चित्रकार, साहित्यकार, स्तंभकार)
मो. 9602015389
Email: chetanaudichya3jan@gmail.com

इस बार

- **अतिथि संपादक की कलम से...**
  लिखा लिखी की है नहीं, देखा देखी बात.../ चेतन औदिच्य 5
- **संपादकीय**
  सफेद कैनवस पर भरे उम्मीदों के रंग क्या रंगों की आत्मा होती है...!! 8
- **कला संवाद**
  खुल गए चित्र के बन्ध ! हेमंत शेष से सुनील और रंजन गूंजन 11
  मैं चित्र पर फिल्मी गाने भी लिख देता हूँ .../ अनिस नियाजी 15
  चित्रकार प्रभाकर बर्वे और विक्रम मराठे के बीच पत्राचार/ विक्रम मराठे 17
- **कला चिंतन**
  दृश्य के भीतर दृश्य की आभासी दुनिया: डिजिटल पेंटिंग/विनोद शाही 20
  समकालीन कला : अभिव्यक्ति, बाजार और.../अवधेश मिश्र 23
  कला में सुंदरता असुंदरता के प्रश्न/ अरविंद औझा 27
  कार्टून कला : पत्रकारिता का मौन और मुखर ब्रह्मास्त्र /चन्द्र मोहन 30
- **कला-मत**
  देखूं जैसी कला की दुनिया/जॉनी एम. एल. 33
  बदलते भारत की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिबिम्ब.../ कनु पटेल 38
- **कला साधक**
  जय कृष्ण अग्रवाल के लिए कवि नरेश सक्सेना.../नरेश सक्सेना 42
  मेरी कला यात्रा के पथ-प्रदर्शक : कलाविद्.../ लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ 45
- **कला भाव**
  स्मृतियों के वातायन से /डॉ. भारत भूषण 48
  चार चेतनाएं, एक पीड़ा: रचनात्मक संवेदना .../डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला 53
- **कला लेख**
  ओरिएण्टलिज़्म, भारतीय कला परंपरा और .../ सुमन कुमार सिंह 55
  "अवकाश की धुरी से उपजा संसार"/ राजेश एकनाथ पाटिल 58
  दृश्यकला में चित्रावण कला की रूपांकन छवियाँ/डॉ. पूरन सहगल 62
  लोक संस्कृति और लोक चित्र की परम्परा/डॉ. सुमन चौरे 66
  समकालीन दृश्य कला के परिप्रेक्ष्य में छायांकन कला.../मनोहर काजल 69
- **कला कविता**
  यक्षिणी/ विनय कुमार 71
  नुमाईश और गमला/ डॉ. चन्द्रशेखर काले 75
  वैशाली और ग्वेर्निका /महावीर वर्मा 76
  सदाशिव कौतुक की कविताएं/सदाशिव कौतुक 77
- **अद्वैत -विर्मश**
  समाज के परिवर्तन और समृद्धि के लिये स्व चेतना आवश्यक/रमेश शर्मा 79
- **नर्मदा जयंती पर्व**
  नर्मदा : साहित्य से लेकर संस्कृति तक, परम्परा.../शुभम चौहान शोधार्थी 81
- **पुनर्पाठ-संस्कृति**
  गोदना, सौन्दर्य बोध को दर्शाने वाली सदियों .../डॉ. कपिल तिवारी 83
- **आलेख**
  भारतीय ग्राम्य सौंदर्य का अनोखा छायाकार .../ डॉ. नरेश अवस्थी 85
- **पुस्तक : समीक्षा**
  ॐ नारायणाय नम: गायनाचार्य पंडित नारायणराव .../मंजरी सिन्हा 87
  भारतीय मानसिकता व कैनेडियन वास्तविकता का आईना/मुकेश दुबे 90
- **समवेत, प्रतिक्रिया** **92-96**
- **किसान कल्याण- वीर भारत न्यास**
  किसान कल्याण स्वाभिमान पर्व क्विज का प्रथम चरण .../ श्रीराम तिवारी 97

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य आवरण - चेतन औदिच्य | **कलाकृति:** गोपाल आचार्य
छायाचित्र -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार
सहयोग- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र :** दिलीप शर्मा, प्रमोद सिंह
आवरण सज्जा - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

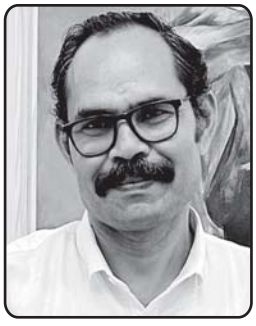

लिखा लिखी की है नहीं, देखा देखी बात...

> आज समकालीन कला को लेकर हमारे सामने अनेक विमर्श खड़े हैं- पहचान का विमर्श जो जाति, लिंग, नस्ल, सांस्कृतिक पहचान आदि से संबद्ध है। उपनिवेश काल के इतिहास और संस्कृति से जुडा विमर्श, जो पश्चिमी कला-मानकों के प्रभुत्व, देशज परंपरा की पुनः पहचान तथा पूर्व दक्षिण के लोगों की भावनाओं का स्वर है। स्त्री की भूमिका और उसके शरीर से जुड़ी राजनीति से संबद्ध, स्त्रीवादी जेंडर की आवाज़ का विमर्श। युद्ध, सत्ता और शक्ति के केंद्रीय -करण का विमर्श। अधुनातन तकनीक और कलाबाजार का विमर्श, जिसमें डिजिटल इंस्टालेशन, एआई कला, एन एफ टी, वर्चुअल रिअलिटी, आर्काइव, मेमोरी, इन्वायरनमेंट, इकोलॉजी आदि इसके विषय के रूप में सामने हैं।

समकालीन दृश्यकला विशेषांक आपके समक्ष है। विश्व की दृश्यकला का आरंभ वहीं से शुरू हो जाता है, जहां से मनुष्य की 'आदिम चेतना' ने अभिव्यक्ति की देह धारण की। यह अभिव्यक्ति कंदराओं, शिलाओं, भित्तियों, वस्त्र-पटों से होते हुए आज, कागज, कैनवस और डिजिटल सतहों तक चली आई है। वर्तमान कला परिद्वय ने सीमाओं का अतिक्रमण कर शैलियों तथा माध्यमों को एक दूसरे में विसर्जित किया है। दृश्यकला ने इस यात्रा में अपनी भंगिमा को वट देते हुए, अपने स्वरूप में भी अनेक तरह के परिवर्तन किए, जिसमें, अभिनय, देह-प्रदर्शन और संवाद के साथ, हर उस वस्तु को सम्मिलित कर लिया गया जो, संसार में दिखाई देती है। वे वीडियो आर्ट, इंस्टालेशन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि के रूप में हमारे सामने है। विचार के तल पर इस दौरान पश्चिम में कला, जहां राजनीतिक और सामाजिक प्रतिरोध का स्वर बनीं। वहीं एशियाई और अफ्रीकी महाद्वीप के कलाकारों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान, स्मृति-परंपरा और स्थानिक-वैशिष्ट्य को आधुनिक दृश्यभाषा बनाया।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारतीय उपमहाद्वीप का कला चिंतन पश्चिम के कला चिंतन से भिन्न रहा है। हमारा आधार ऋग्वेद की उस ऋचा से आरंभ हुआ, जहां कहा गया 'रूपम् रूपम् प्रतिरूपो बभूव। तदस्य रूपम् प्रतिचक्षणाय।' अर्थात वह अनेक अनेक रूपों में प्रकट होता है, देखने वाले के लिए वह अलग-अलग रूप धारण करता है। यही हमारी अनुभूति का चरम रहा। इसे विस्तार देते हुए सांख्य, न्याय, मीमांसा और वेदांत की मनीषा ने अद्वैत पर पहुंचाया। कला में अद्वैत भिन्न भिन्न रूपों में हमारे सामने कलाकृतियों का रूप ले रहा है। पश्चिम में जहां, माइमेसिस की प्रेरणा से, कला यथार्थवाद, अनुकरण और परिप्रेक्ष्य तक सीमित रही तथा कलाकार एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में जाना गया, जिसकी अभिव्यक्ति निजी थी। इसके विपरीत हमारी कला परंपरा ने कलाकार को साधक बनाया और कला अभिव्यक्ति को उपासना का हेतु। सामूहिक चेतना के भाव-बोध के साथ 'रसो वै सह' के उद्घोष ने रस को कला में केंद्रीय स्थान दिया। पश्चिमी देह-मांसलता के विलोम में, हमारे कलाकारों के बनाए रूपों में, भंगिमा की लाक्षणिकता, भावों की प्रवणता और लावण्य की व्यंजकता एक साथ स्फोट करती है। रूप के माध्यम से चेतना का स्पर्श कराना इसका मूल उद्यम रहा। यहीं से भारतीय कला मनीषा, कला को 'देह से निकाल कर 'विदेह' की यात्रा पर ले चलती है। यही भारतीय कला का आध्यात्मिक उन्मेष भी है।

आज समकालीन कला को लेकर हमारे सामने अनेक विमर्श खड़े हैं- पहचान का विमर्श जो जाति, लिंग, नस्ल, सांस्कृतिक पहचान आदि से संबद्ध है। उपनिवेश काल के इतिहास और संस्कृति से जुडा विमर्श, जो पश्चिमी कला-मानकों के प्रभुत्व, देशज परंपरा की पुनः पहचान तथा पूर्व दक्षिण के लोगों की भावनाओं का स्वर है। स्त्री की भूमिका और उसके शरीर से जुड़ी राजनीति से संबद्ध, स्त्रीवादी जेंडर की आवाज़ का विमर्श। युद्ध, सत्ता और शक्ति के केंद्रीय -करण का विमर्श। अधुनातन तकनीक और कलाबाजार का विमर्श, जिसमें डिजिटल इंस्टालेशन, एआई कला, एन एफ टी, वर्चुअल रिअलिटी, आर्काइव, मेमोरी, इन्वायरनमेंट, इकोलॉजी आदि इसके विषय के रूप में सामने हैं। इन्हीं परिस्थितियों का संवेदन आज के कलाकार के संघर्ष, इच्छा और समय की अभिव्यक्ति है।

इस दौर की महत्वपूर्ण बात यह है कि 'संस्थागत रूप में कला का भिन्न प्रकार का परिदृश्य सामने आया है। बाजार तथा वैचारिकी के हस्तक्षेप के साथ समाज की स्वीकृति-अस्वीकृति इसमें सम्मिलित है। वर्तमान समय में व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अनेक संस्थाओं द्वारा कला गतिविधियां आयोजित की जा रही है। कस्बों- नगरों में छोटे

स्तर पर आयोजन हो रहे हैं, तो वैश्विक स्तर पर बड़े-बड़े आर्ट फेयर के रूप में कला गतिविधियां संचालित है। इन आयोजनों के भिन्न-भिन्न लक्ष्य है। कहीं यह कलाकारों की छवि के उत्थान-पतन के साधन हैं, तो कहीं भूमंडलीय आधिपत्य के उपकरण। परंतु यह बात कहनी पड़ेगी कि सोशल मीडिया के आने के बाद विश्व के छोटे-बड़े सभी कलाकारों की नजर इन पर रहती है। गाहे-बगाहे वे इससे प्रेरित अथवा हतोत्साहित होते रहते हैं। इसका एक पक्ष यह भी है कि कला अब आत्मान्वेषण और रसानुभूति की बजाय, इस कृत्रिम चमक दमक के बरक्स बाहर की ओर अधिक ताकने लगी हैं।

जब हम विश्व में हो रही कला गतिविधियों की पंड़ताल करते हैं तो 'फ्रिज लंदन' जैसे आर्ट फेयर की बात आती हैं। इस आर्ट फेयर को 'थ्योरी-ड्रिवन आर्ट ' कहा जाता रहा है। अर्थात अवधारणा केंद्रीत कला। इसका उद्देश्य कला-दर्शक को बौद्धिक रूप से असहज करना है। यही इसकी वैचारिक शक्ति मानी जाती है। यहां अनुभव और कलाकृति की बजाय किसी विचार या सिद्धांत को पहले महत्व दिया जाता है। बाजार को विचार के अधीन रखा गया है। और इसी वैचारिक धरातल पर कृतियों का क्रय-विक्रय होता है। इस आयोजन के लिए अनेक कला समीक्षकों ने कहा है कि, यह बौद्धिक रूप से साहसी अवश्य है किंतु सामान्य दर्शकों की समझ के लिए बहुत कठिन है। असल में कला में अत्यधिक वैचारिक हस्तक्षेप कला की दृश्य संवेदना के मूल प्रत्यय को निष्प्राण कर देता है। फिर भी इस लिहाज से उल्लेखनीय है कि यहां समकालीन और जीवित कलाकारों को केंद्र में रखा जाता है।

अमरीका के प्रसिद्ध, ' दी आर्मरी शो ' को उभरते हुए कलाकारों का प्रवेशद्वार कहा जाता है। इसे भिन्न नस्ल और पहचान के अमरीका में लोकतांत्रिक बहुलता की आवाज के रूप में परिभाषित किया है। हाशिये पर जी रहे लोगों के जीवन-पक्षों की प्रधानता यहां की कृतियों में देखी जा सकती है। कृतियां कथाओं से संबद्ध हैं। बाजार और विचार के बीच संतुलन तथा सामाजिक प्रतिबद्धता इस कला आयोजन की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। एक बड़ा बुद्धिजीवी वर्ग 'दी आर्मरी शो' को लोकतांत्रिक चेतना के दर्पण के रूप में देखता है। किंतु अनेक बार ऐसा देखने में आता है कि यहां की विविधता 'क्यूरेटोरिअल टैग ' जैसी लगती है। फिर भी इस आयोजन की सामाजिक प्रतिबद्धता व्यापक स्तर पर स्वीकार की जाती है। यह बड़ी बात है।

अमरीका में फ्लोरिडा के मियामी बीच पर लगने वाले 'आर्ट बेसल मियामी' फेयर के बारे में कथन है कि 'यहां कला, एक अनुभव का पिटारा है।' पूरी दुनिया में इस आर्ट बेसल की विशालता चर्चित है। इसे विश्व के कला बाजार का शिखर भी कहा जाता है। क्योंकि 280 से अधिक गैलरियां इसमें भाग लेती है तथा मल्टी मीलियन डालर की बिक्री के रिकार्ड तोड़ती हैं। भीमकाय इंस्टॉलेशन, अद्भुत विन्यास का फैशन और डिजिटल स्पेक्टिकल अनुभव इसे विशिष्ट बनाता है। किंतु आलोचकों की नज़र में यह आयोजन कला को 'अभिजात्य के अधीन' करने का उपक्रम है। कला और पूंजी का साथ-साथ होना यहां की सच्चाई है। इसीलिए दृश्य की वैभवता और पूंजी को इस कला आयोजन का सारतत्व कह सकते हैं।

केरल का कोच्चि बिनाले भारतीय संदर्भ में एक विशिष्ट स्वर को प्रस्तुत करता है। इतिहास आदि के साथ स्थानीयता यहां का केंद्रीय विषय हैं। बाजार को यहां हाशिये पर रख कर संवाद को प्रमुखता दी गई है। विचार के स्तर पर कोच्चि बिनाले को गरिमामयी कहा जा सकता है। यह अपनी गतिशीलता में बहुत धीमा है, किंतु चिंतनशील प्रवृत्तियां यहां की कलाकृतियों में साफ-साफ देखी जा सकती है । इसके प्रबंधन और निरंतरता पर अक्सर सवाल उठे हैं फिर भी कहना ठीक रहेगा कि गहरे संवाद के रूप में यह एक स्वस्थ अवकाश उपलब्ध कराता है।

भारतीय आधुनिक और समकालीन कला के व्यवहारिक मंच के रूप में 'इंडिया आर्ट फेयर' को माना जाता है। यहां प्रयोग धर्मिता सीमित है फिर भी कलाकारों को पहचान दिलाने, उनका नेटवर्क स्थापित करने तथा कलाकारों को आर्थिक स्थिरता देने में यह मंच सफल रहा है। संभवत इसीलिए आलोचकों ने इंडिया आर्ट फेयर को 'सुरक्षित कला' का मंच कहा है। इस फेयर को समर्थन देने वालों का तर्क है कि बिना आर्थिक आधार के वैचारिक बहस का कोई अर्थ नहीं है। भारतीय कला जगत के लिए इस आवश्यक संरचना का महत्व दिखाई देता है।

इस पूरे भूमंडलीय परिदृश्य से, खास बात यह निकल कर आती हैं, कि समकालीन दृश्यकला इंग्लैंड में विचार बनकर , न्यूयार्क में आवाज़ के साथ लोकतंत्र की कथा बन कर तथा मियामी में दृश्य वैभव और बाजार बनकर हमारे सामने आती है। भारतीय संदर्भ में यह कोच्चि में इतिहास स्मृति, आत्मिक अवलोकन एवं परंपरा के नये अनुबंध की तरह तथा दिल्ली में अवसर की उपलब्ध और संरचनात्मक आश्वासन लेकर उपस्थित होती है। इसी से यह प्रश्न खड़ा होता है, कि विश्व के विचार, आवाज और बाजार के बीच भारत की समकालीन दृश्यकला को कैसे चीह्ना जाए?

'रूपंकर' विशेषांक का उद्देश्य यही है कि कला की इन समवेत स्थितियों में, कला-चिंतक, कलाकार और कला-रसिकों की अनुभूतियों को एक जीवंत संवाद के रूप में सामने लाया जाए। इस हेतु इस अंक में कलाकृतियों पर चिंतन के साथ कलाकार का साक्षात्कार, कला-कर्म पर गवेषणा, कला-रसिकों की काव्यात्मक अभिव्यक्तियां, मौजूदा परिदृश्य पर टिप्पणियां तथा संस्मरण इत्यादि लेखों को सम्मिलित किया गया है। हमारे समय के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रो. जयकृष्ण अग्रवाल सर के व्यक्तित्व